दैनिक उत्तम हिन्दू
स्थापना 1983
■ पंजाब ■ हरियाणा ■ हिमाचल ■ चंडीगढ़ ■ दिल्ली ■ उत्तर प्रदेश

9 March, 2026

वरिष्ठ पत्रकार उज्जवल शर्मा की यात्रा डायरी से

अंडमान-निकोबार की यात्रा दौरान पत्रकार उज्जवल शर्मा के साथ साथी पत्रकार जानकारी लेते हुए।

हिंद महासागर के बीच बसे अंडमान-निकोबार द्वीप समूह को अक्सर लोग केवल एक खूबसूरत पर्यटन स्थल के रूप में जानते हैं। तस्वीरों में दिखने वाले नीले समंदर, सफेद रेत वाले समुद्र तट और हरियाली से घिरे द्वीप किसी स्वप्निल दुनिया का एहसास कराते हैं। लेकिन जब इन द्वीपों को करीब से देखने और वहां 7 दिन बिताने का अवसर मिला, तो यह समझ में आया कि अंडमान-निकोबार की कहानी केवल पर्यटन की नहीं है।

यह कहानी है विकास, अनुशासन, प्रकृति संरक्षण, समुद्री जीवन और स्थानीय समाज के बदलते स्वरूप की। पत्र सूचना कार्यालय (पीआईबी), शिमला द्वारा आयोजित भ्रमण के दौरान मुझे भी इन द्वीपों को करीब से देखने और समझने का अवसर मिला। राजधानी पोर्ट ब्लेयर (अब श्री विजयपुरम) से शुरू हुई यह यात्रा समुद्र के बीच बसे कई द्वीपों, ऐतिहासिक स्थलों, प्राकृतिक चमत्कारों और विकास की नई पहलों से रूबरू कराती चली गई। एक पत्रकार के रूप में यह यात्रा केवल एक पर्यटन अनुभव नहीं थी, यह समझने का अवसर भी थी कि भारत के इस सुदूर समुद्री क्षेत्र में विकास की एक अलग और प्रेरक कहानी लिखी जा रही है।

स्वच्छता और अनुशासन से चौंकाता पोर्ट ब्लेयर

अंडमान-निकोबार की राजधानी पोर्ट ब्लेयर पहुंचते ही सबसे पहले जिस चीज़ ने ध्यान खींचा, वह यहां की स्वच्छता और अनुशासन था। सड़कों पर न तो कूड़े के ढेर दिखाई दिए और न ही पान की पीक से रंगी दीवारें। देश के कई बड़े शहरों में जहां सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी आम बात है, वहीं पोर्ट ब्लेयर की सड़कें और गलियां बेहद साफ-सुथरी नजर आईं। ऑटो और टैक्सी चालक भी यातायात नियमों का अनुशासन के साथ पालन करते दिखाई दिए। बिना हॉर्न बजाए वाहन चलाना और पैदल यात्रियों को रास्ता देना यहां की सामान्य संस्कृति का हिस्सा है। शहर में अपराध दर भी बहुत कम है। यहां तैनात एक पुलिस अधिकारी ने बातचीत में बताया कि छोटी-मोटी झड़पों को छोड़ दें तो गंभीर अपराध लगभग नहीं के बराबर हैं। द्वीपों की भौगोलिक स्थिति और समाज की आपसी निकटता भी इसमें एक बड़ा कारण है।